



पर्यावरण रोगी

रजनी मोहगावकर

पात्र - तिवारी जी, श्रीमती तिवारी, मि. श्रीवास्तव, शर्मा जी, अध्यापक, पर्यावरण रोगी, श्रीमती शर्मा, मिश्रा जी, शिखा (मनोवैज्ञानिक)

पर्दा उठता है, तिवारी जी अपने घर के ड्राइंग रूम में बैठे हैं, तभी मि. श्रीवास्तव वहां प्रवेश करते हैं।

- तिवारी जी : आइये-आइये, बैठिए।
- श्रीवास्तव जी : नमस्ते! बहुत दिनों से आपसे मुलाकात नहीं हुई। इधर से गुजर रहा था, सोचा आपसे मिलता चलूँ..... (तभी तिवारी जी के पड़ोस से जोर-जोर से झगड़ने की आवाजें आती हैं।
- श्रीवास्तव : अरे! यह कैसा शोर है पड़ोस में, कौन रहता है यहाँ, क्या इनके यहाँ हमेशा झगड़े होते हैं?
- तिवारी जी : हाँ, पड़ोस में शर्मा जी रहते हैं - खाना बनाते समय पति-पत्नी में अक्सर बहस होती है।
- श्रीवास्तव : क्या पत्नी उनकी पसंद का खाना नहीं बनाती? (तभी श्रीमती तिवारी का प्रवेश)
- श्रीमती तिवारी : नमस्ते श्रीवास्तव जी। यह बात नहीं है। वह बेचारी तो हरदम उनकी सेवा में तत्पर रहती हैं परन्तु शर्मा जी को समझना बड़ा टेढ़ा काम है। पता नहीं, आखिर वे चाहते क्या हैं कैसे खुश हो सकते हैं वे।
- श्रीवास्तव : ये शर्मा जी करते क्या हैं।
- श्रीमती तिवारी : ये पास के ही शास्त्री विद्यालय में अध्यापक हैं, पर्यावरण विषय के। उन्होंने प्रदूषण का बहुत गहराई से अध्ययन किया है। उन्हें हर चीज़ अस्वच्छ तथा प्रदूषित दिखाई देती है।
- श्रीवास्तव जी : मन हो रहा है ऐसी पर्सनेलिटी से मिलने का।
- मि. तिवारी : तो चलिए मिल ही लेते हैं। (झगड़े की आवाज और जोर से आती है) शर्मा जी

की अपने आपको सिर से नीचे तक कपड़े से ढंके हुए मुँह में पाटी।

- शर्मा जी : क्या बार-बार पूछती हो, एक बार बताया न कि आलू से गैस बनती है।
- श्रीमती शर्मा : मैं तो परेशान हो गई हूँ रोज-रोज के झगड़े से। जाइये होटल से खाना मंगवा लीजिए।
- शर्मा जी : वहाँ का खाना कोई खा सकता है क्या? वहाँ खाना बनाने वाले क्या वहाँ की साफ-सफाई ...। (तभी श्रीवास्तव जी एवं तिवारी जी शर्मा जी के घर में प्रवेश करते हैं)।
- तिवारी जी : क्या बात है शर्मा जी, क्यों झगड़ा कर रहे हैं।
- शर्मा जी : क्या बताऊँ, ये शीला मेरी बात को समझ ही नहीं रही है। इन्होंने कभी साइंस पढ़ी ही नहीं है न - बस - 'आर्ट्स, हिस्ट्री, ज्योग्राफी.....।
- शीला जी : (श्रीवास्तव जी से) आप ही बताइये भाई साहब, खाना बनाने के लिए कौनसी सब्जी अच्छी है।
- श्रीवास्तव जी : शर्मा जी, मैंने सुना है आप पर्यावरण के शिक्षक हैं, और आयुर्वेद के भी ज्ञाता हैं (शर्मा जी अपनी तारीफ सुनकर खुश होते हैं)।
- शर्मा जी : वही तो, मैं अपना ज्ञान अपनी पत्नी के साथ बाँटकर स्वस्थ रहने वाला खाना बनवाना चाहता हूँ, पर ये हैं कि समझती ही नहीं।
- श्रीवास्तव जी : अच्छा बताइये, क्या खाना चाहिए?
- शर्मा जी : मेरे हिसाब से तो अब कुछ बचा ही नहीं है। बैंगन भारी होता है, घुड़ियाँ और कटहल गरिष्ठ होते हैं।
- श्रीवास्तव जी : पत्तागोभी - फूलगोभी?
- शर्मा जी : बस दोनों वातकारक होती हैं।

- तिवारी जी : अच्छा टमाटर-भिंडी।
- शर्मा जी : टमाटर से एसिडिटी होती है। भिंडी चिकनी-चिकनी। खा ही नहीं सकते।
- मि. तिवारी : फिर हरी पत्ते वाली भाजी?
- शर्मा जी : उससे दस्त लगते हैं। एक बात और है इन सब सब्जियों में, इतने ज्यादा कीटनाशक होते हैं कि इससे हमारे रक्त में धीरे-धीरे जहर घुलता जाता है।
- शीला : भाई साहब, मेरे लिए बहुत बड़ी समस्या है। समझ में नहीं आता, क्या बनाया जाये इनके लिए।
- शर्मा जी : क्या आपको पता है कि मिट्टी से ये रसायन भू जल में घुलते जा रहे हैं।
- तिवारी जी : फिर आप ही बताइये, जिया कैसे जाये साहब। ऐसा कीजिए, दूध पी लिया कीजिए।
- शर्मा जी : क्या दूध पीएँ, अरे। ये गाय-भैंस क्या खाती हैं - वही रसायनों वाला चारा न और फिर क्या वे हमेशा स्वस्थ रहती हैं और दूधवाले दूध में क्या मिलाते हैं, यूरिया, वह भी 90%।
- श्रीवास्तव जी : मान गये, आपसे बहस में कोई जीत ही नहीं सकता, फिर क्या बचा है खाने के लिए? फल खाया कीजिए।
- शर्मा जी : क्या बात करते हैं, महा भयंकर, उन्हें तो कार्बाइड से पकाया जाता है।
- तिवारी जी : फिर अभी आपका विज्ञान इतना आगे तो बढ़ा नहीं कि एक कैप्सूल खा लिया और भूख मिट गयी।
- शर्मा जी : अरे हाँ कैप्सूल से याद आया, क्या ये दवाइयाँ सही बन रही हैं? बहुत-सी प्रतिबंधित दवाइयों का भी हमारे यहाँ इस्तेमाल होता है।
- श्रीवास्तव जी : अब हम पौधे तो हैं नहीं कि हवा

विज्ञान नाटिका



और पानी से भोजन बना सकें।

• शर्मा जी : अरे हाँ, कैप्सूल से याद आया, क्या ये दवाइयाँ सही बन रही हैं कितने ही लोग नकली दवाइयों से मर रहे हैं।

• मिश्राजी, तिवारी जी श्रीवास्तव जी : शर्मा जी, आप तो बहुत ज्ञानी हैं। कहने की हिम्मत नहीं हो रही है,

फिर भी ऐसा लगता है आपने अपने दिमाग में बहुत से भ्रम पाल लिए हैं। लगता है आपको मानसिक चिकित्सा की आवश्यकता है। चलिए, किसी मनोवैज्ञानिक के पास चलते हैं

(क्रोधित होकर)

• शर्मा जी : क्या मैंने कोई गलत बात कही है? क्या मैं आपको पागल नज़र आता हूँ? जाइये, आप लोग जाइये यहां से (तभी वहां मैडम शिखा प्रवेश करती हैं श्रीमती शर्मा के साथ)।

• शिखा : नमस्ते शर्मा जी, सुना है आप पर्यावरण विषयक ज्ञाता हैं, चौबीसों घंटे इसी चिंता में घुलते रहते हैं कि इस प्रदूषण में स्वस्थ कैसे रहा जाए?

• शर्मा जी : हाँ चिंता तो मुझे होती है।

• शिखा : आपको क्या, हम सभी को होती है लेकिन इसको लेकर जीना तो नहीं छोड़ सकते हम? अपनी सहज जिंदगी जीते रहिए और हाँ, आपके मन में पर्यावरण जागरूकता की अलख जगाने का जो संकल्प है, उसे पूरा करते जाइये।

विचलित होने की आवश्यकता नहीं है, थोड़ा अपने आपको इसी माहौल में निश्चित होकर जीने के लिए तैयार कीजिए, सब आसान हो जाएगा।

ये गाय-भैंस क्या खाती हैं - वही रसायनों वाला चारा न और फिर क्या वे हमेशा स्वस्थ रहती हैं और दूधवाले दूध में क्या मिलाते हैं, यूरिया, वह भी 90%।

अभी आपका विज्ञान इतना आगे तो बढ़ा नहीं कि एक कैप्सूल खा लिया और भूख मिट गयी। कैप्सूल से याद आया, क्या ये दवाइयाँ सही बन रही हैं? बहुत-सी प्रतिबंधित दवाइयों का भी हमारे यहां इस्तेमाल होता है।

• सब एक साथ - और फिर हमारा गांव तो तैयार हो ही रहा है.....।

वही रहेंगे..... और अपना काम करते रहेंगे।

शिखा - मैं भी आपकी इस मुहिम में शामिल होना चाहती हूँ....।

सब एक साथ - स्वागत है।

आज से ही हम अपना काम शुरू करते हैं- (पर्दा गिरता है)।

• श्रीवास्तव जी : अब हम पौधे तो हैं नहीं कि हवा से और पानी से भोजन बना सके।

• शर्मा जी : हवा की बात कर रहे हैं? वह तो 90% तक विषैली हो गई है। वह दिन दूर नहीं जब आप सबको भी मेरे समान चौबीसों घंटे सिलिंडर लगाकर घूमना पड़ेगा।

• तिवारी जी : अच्छा पानी तो शुद्ध है।

• शर्मा जी : नहीं, कीटाणु युक्त, रसायनों से भरा।

• श्रीवास्तव जी : और मिनरल वाटर?

• शर्मा जी : उसमें 90% कीटनाशक मिले रहते हैं। (तभी इनके एक और पड़ोसी मिश्रा जी आते हैं, वे भी सभी बातें सुनकर बहुत परेशान होते हैं।

• पिताजी : अच्छा बताइये, अब इस समस्या का समाधान क्या है?

• शर्मा जी : रास्ता यही है कि कम से कम खायी जाय, पानी उबालकर पिया जाये।

• मिश्रा जी : अच्छा शर्मा जी, आप करते क्या हैं।

• शर्मा जी : मैं एक शिक्षक हूँ।

• मिश्रा जी : आपके पास तो बहुत अच्छा माध्यम है बच्चों को समझाने का। आप बच्चों को जैविक खेती का महत्व समझा सकते हैं। जैविक कीटनाशकों को बनाना और उनका उपयोग करना सिखा सकते हैं। इससे मिट्टी और पानी दोनों सुरक्षित रहेंगे।

• श्रीवास्तव जी : और भी बहुत-सी बातें हैं। जल स्रोतों को गंदा न करना, मोटर गाड़ियों में पर्याप्त पेट्रोल डालना।

• तिवारी जी : क्या हम सब मिलकर एक काम कर सकते हैं?

• सब एक साथ : कौन सा?

हम सब मिलकर एक छोटा-सा गांव गोद ले सकते हैं वहां आदर्श खेती, साफ-स्वच्छ पानी का तालाब, स्वस्थ पशु, सक्षम वन, सुन्दर-सुन्दर पक्षी। हमारा गांव एक स्वर्ग जैसा होगा जिसे देखकर सभी को प्रेरणा मिलेगी।

संपर्क सूत्र :

श्रीमती रजनी मोहगावकर, म. प्र. हाऊसिंग बोर्ड
कॉलोनी, मकान नं. - ईडब्ल्यूएस 42/43, परासिया रोड,
छिंदवाड़ा (मध्य प्रदेश)